International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 10 Issue 2, Mar-Apr, 2022, Impact Factor: 7.326

निराला के काव्यों में प्रगतिशील चेतना

पुष्पा कुमारी

सारांश

सूर्यकांत त्रिपाठी‘निराला’ की कविता का रूप, भाव, गेयता, अन्तर्गुण सबके सब 19वीं सदी की कविता से अलग हैं। गत एक सो वर्षों में संसार, मनुष्य और उसका जीवन पूर्ण रूप से परिवर्तित हुआ है। इस परिवर्तन का प्रतिबिंब उस कविता में भी दर्शनीय है। आधुनिक कविता के गुणों में काव्यात्मक भाषा का अभाव, प्रतीक, तर्क और छंद से छूट, सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग, मनोवैज्ञानिक प्रतीकों का प्रयोग, दूसरी भाषाओं की शब्दावली, कहावतें आदि के आधार पर निराला के काव्य में प्रगतिशील **चेंतना** की विवेचना करना है।

प्रस्तावना

काव्य-प्रयोजन संबंधी व्यक्त धारणाओं को सामने रखकर निराला ने अपनी प्रगतिशील कविताओं का प्रणयन किया। निराला के काव्य में प्रगतिशील और प्रयोगशील तत्व तो प्रारंभ से ही विद्यमान थे। युग चेतना से प्रेरित कवि ने रूढ़िवाद का खंडन, जातिवाद एवं सांप्रदायिकता, अछूत प्रथा, ब्रिटिश शासन की दमन नीतियाँ, नारी विमोचन, आर्थिक असन्तुलन एवं शोषण से प्रेरित मजदूर आन्दोलन एवं किसान आन्दोलन, नव सहित्यन्दोलन आदि प्रगतिशील तत्वों को अपनी कविताओंमें विशेष महत्व दिया। निराला को छोटी बड़ी सारी कविताएं जन-जीवन के उत्कर्ष के साधन के रूप में समर्पित थी। अतः कवि के रूप में निराला की देन का सही मूल्यांकन उनमें प्रस्तुत प्रगतिशील तत्वों के विवेचन से ही संभव है।

1. रुढ़िवाद का खण्डन

निराला के प्रगतिशील विचारों का सच्चा परिचय रुढ़िवाद के विरुद्ध प्रस्तुत कविताओं से ही प्राप्त हो सकता है। उद्धोधन, ध्वनि, बादल-राग, पास ही रे हीरे को खान, भगवान बुद्ध के प्रति, बापू के प्रति ,क्या दुःख दूर कर के बन्धन, तुलसीदास और सरोज – स्मृति में रुढ़िवाद की यथासम्भव चर्चा हुई है, जो निराला के प्रगतिशील विचारों का सच्चा परिचय कराने वाले है। निराला नव जीवन का पक्षपाती है। उनका यह आग्रह है कि सदियों से बने रहने वाले अन्धविश्वास नष्ट – भ्रष्ट हो जाएँ। वे चाहते है कि जीवन के आकाश और भूमि में एक नया सुगन्ध छा जाए|

2. जातिवाद

निराला जी के युग में जातिवाद की पराकाष्ठा थी l देश में सामाजिक एकता के अभाव के कारण विदेशियों की दासतास्वीकार करनी पड़ी थी | निम्न जाति में जन्में शूद्र को अंगीकार न मिलता था और उसको हीन जाति का माना जाता था | व्यक्तिगत गुण नहीं जन्म की जाति ही श्रेष्ठता का आधार माना गया l निराला ने अपनी प्रेमसंगीत, गर्म पकौड़ी, मुक्तकों, तुलसीदास, राम की शक्ति पूजा, स्वामी प्रेमानंद जी महाराज, कुकुरमुत्ता आदि लम्बी कविताओं में भी यत्र-तत्र जातिवाद का खण्डन किया है |

गर्म पकौड़ी पर ब्राह्मणकी पकाई कचौड़ी के उपर पकौड़ी की प्रतिष्ठा करके उन्होंने तथा कथित ब्राह्मण वर्ग पर व्यंग्य चलाया है l यहाँ कवि परोक्ष रूप से जातिगत समस्याओ पर प्रकाश डालता है -

गरम पकौड़ी
ए गरम पकौड़ी
तेल की भूनी
नमक मिर्च की मिली
अरी तेरे लिए छोड़ी
ब्राह्मण का पकायीं
मैंने घी की पकौड़ी|

3. अछूत प्रथा

वर्णाश्रम – धर्म के बिगड़ जाने के कारण जातिगत भेदभाव भारतीय जनजीवन में स्थान पाचुका था | **चाण्डालो** तथा निम्न जातिवालों के स्पर्श एवं सामाजिक संबंध से जातिगत श्रेष्ठता के गिर जाने का भय समाज में फैल गया | 'प्रेम संगीत' में कवि केब्राह्मण का लड़का होने पर भी निम्न जातिवाली पनहारिन पर मुग्ध हो जाने का जीता – जागता वर्णन मिलता है | पनहारिन कोमल सी कलि एवं मतवाली चालों से हीन होने पर भी उसके आचरण को देखकर कवि का दिल प्रेम से तड़प उठता है और छुआछूत की प्रथा एवं रूढिगत अनाचार उसके सामने नहीं टिक सकते | कवि का भावातिरेक यो है –
"ले जाती है मटका – बड़का
मैं देख –देखकर धीरज धरता हूँ |"

4. नारी विमोचन

भारतीय संस्कृति में नारी का महत्वपूर्ण स्थान माना गया था | वह मा, रमा और मंगलदेवता समझी जाती थी | निराला ने तत्कालीन नारी विमोचन आन्दोलन का पूर्णत: समर्थन किया | उन्होंने अपनी विधवा, प्रेम सगीत, रानी और कानी, सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति, मुक्तकों, पंचवटी – प्रसंग

एवं सरोज स्मृति इन लम्बी कविताओं में नारी की दुखद स्थिति का जीता – जागता वर्णन किया है –

वह दुनिया की नजरों से दूर बचाकर
रोती है अस्फुट स्वर में
दुःख सुनता है आकाश धीर
निष्चल समीर
सरिता की वे लहरें भी ठहर – ठहरकर
कौन उसको धीरज दे सके
दुःख का भार कौन ले सके ?

कोई भी उसके धीरज देने और उसके आंसुओ को पोछने नही आता ।निराला अंत में बतातेहै की सारा भारत उसके आंसुओ से तर गया है। कवि का आग्रह है किनारी सुधार के प्रयत्न प्रशस्त हो जाएंस 'सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति' कविता में नारी के महत्व का गीत गाया गया है| उन्होंने धन के, मान के बांध को जर्जर के अपूर्व विवेक द्वारा प्रणय का समर्थन करने वाले सम्राट का समर्थन किया है| निराला जी ने स्त्री की भिन्न – भिन्न समस्याओं को अपने साहित्य में उजागर किया है| एक प्रतिशोध की कहानी 'कमला' है| जिसमें 'कमला' के पति एक झूठे अपवाद के कारण इसे छोड़ देते है, लेकिन वह एक सच्ची पतिव्रता के समान पतिदेव की आराधना में लगी रहती है| उसकी तपस्या के प्रभाव से या देवगति से पति की बहन ऐसी परिस्थिति में पड़ जाती है कि गाँव के लोग उनसे किसी तरह का व्यवहार नही रखना चाहते l न्याय ठुकराई हुई पत्नी के यहाँ पतिदेव से भीख मंगवाता है| भिक्षुक पति को पहचान कमला उसे माफ कर देती है लेकिन स्वयं पति के पास नहीं आती| " स्त्रियाँ उसे देवी के भाव से मन ही मन अपना आदर्श मानकर पुजती है l" इस कहानी में समस्या का समाधान नहीं हुआ| निराला जी बताते हैं कि "परित्यक्ता नारी स्त्रियों से पूजे जाने पर भी फिर अपनी गृहणी के स्थान को नहीं पा सकी |"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रो. देशराज सिंह भाटी –'निराला और उनकी अपरा' द्वितीय संस्करण ; 1968पृ० 13 2. नंददुलारे वाजपेयी – 'कवि निराला' ,प्र .सं .1965,पृ० 41
3. 'निराला रचनावली' -1, पृ० 104
4. 'निराला रचनावली' – 2, पृ० 127
5 मनुस्मृति श्लोक 1999, अध्याय– 9, श्लोक 3, पृ० 389
6 मणिकण्ठन नायर , `प्रेम वुं स्त्री पुरुष संकल्पवुम'(मलयायन) 1996 ,पृ० 50
7 'निराला रचनावली'-1, पृ० 41
8 'निराला रचनावली' -2,पृ०0 47
9 'निराला रचनावली' -1,पृ० 127